आतंकवाद

जम्मू कश्मीर–एक प्रयोगशाला

विचारधारा और कार्यक्रम

भारत नीति प्रतिष्ठान
India Policy Foundation

आतंकवाद

जम्मू कश्मीर-एक प्रयोगशाला

विचारधारा और कार्यक्रम

INDIA POLICY FOUNDATION
॥ प्रदीपयेम जगत् सर्वम् ॥
भारत नीति प्रतिष्ठान
India Policy Foundation

आईपीएफ रिसर्च टीम

श्री मनमोहन शर्मा, डॉ. सुमन कुमार, डॉ. गीता भट्ट
बसंत सैनी, अंकिता चौधरी राठी, श्रुतिकर अभिजीत

सहयोग

भावना कुमारी, विशाल वैभव
अभिनीत कालिया, शिव कुमार सिंह
प्रमोद कुमार, संदीप त्रिपाठी

प्रकाशक :

भारत नीति प्रतिष्ठान
नई दिल्ली-110016
ई-मेल : indiapolicy@gmail.com
वेबसाइट : www.indiapolicyfoundation.org

संस्करण : प्रथम, मार्च 2019
© **भारत नीति प्रतिष्ठान**
ISBN : 978-93-84835-29-3
मूल्य : 100/-

मुद्रक : दीपक ऑफसेट

कश्मीर : एक दृष्टिकोण

भारत का मुकुट कहा जाने वाला प्रदेश जम्मू कश्मीर, एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत रही है, जिसे वर्तमान समय में दुर्भाग्य से भूला दिया गया है। ऐतिहासिक प्रमाणों, काव्यात्मक समीक्षाओं एवं पुराणों के माध्यम से ज्ञात होता है कि, कश्मीर का सृजन ऋषि कश्यप ने किया था। कश्मीर के नाम से विख्यात स्थल पहले कश्मीरा के नाम से जाना जाता था, जिसे ऋषि कश्यप ने एक झील के पानी को सुखाकर आवृत किया था। हिमाचल पर्वत की शृंखलाओं से ओत-प्रोत कश्मीर घाटी अप्रतिम सौन्दर्य की प्रशंसा साधुओं, राजाओं और सामान्य जनमानस द्वारा एक जैसी ही कही गई है।

चित्र 1 : अवंतीपुरा में अवंतीस्वामिन मंदिर पर सुन्दर नक्काशी

Source: http://www.findmessages.com/old-carvings-on-the-wall-of-avantiswamin-temple-at-awantipora

कश्मीर का स्वर्णिम इतिहास

कुछ जीवित प्राचीन कश्मीरी धर्मग्रंथों में से एक नीलमत पुराण है, जिसे इसके सांस्कृतिक इतिहास में संदर्भ ग्रंथ के रूप में पाया जाता है। यह महाकाव्य महाभारत[1] के समय के कश्मीर के अस्तित्व का उल्लेख करता है। 12वीं शताब्दी के कश्मीरी इतिहासकार कल्हण ने उत्तर-पश्चिमी भारतीय उपमहाद्वीप के

Shri Ajit Kumar Azad
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

ऐतिहासिक कालक्रम को लिखा है, जिसमें विशेष रूप से कश्मीर पर शासन करने वाले क्रमिक राजवंशों का विवरण है। इस काव्य को राजतरंगिणी[2] कहा जाता है। कल्हण की पुस्तक में प्रलेखित सबसे पहला राज्य राजा गोनंद का है, जो 2449 ईसा पूर्व में स्थापित था। कई राजवंशों और राजाओं ने कश्मीर की भूमि पर शासन किया जो समृद्ध व्यापार मार्ग के निकट था, और इसलिए यह प्रदेश प्रचुर समृद्ध भी था। 7वीं शताब्दी में भारत का दौरा करने वाले चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने लिखा है, कि मैदान के पश्चिम और दक्षिण के हिस्से भी कश्मीर के राजा के प्रत्यक्ष नियंत्रण में थे। कर्कोटा राजवंश के दुर्लभवर्धन के शासनकाल के दौरान कश्मीर राज्य वर्तमान पंजाब और अफगानिस्तान[3] तक फैला हुआ था।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

आठवीं शताब्दी में 725 ई. से 761 ई. तक शासन करने वाले कर्कोटा वंश के ललितादित्य ने उत्तर भारत, मध्य एशिया और तिब्बत के अधिकांश हिस्सों पर विजय प्राप्त की थी। उनकी दृष्टि ने भारतीय साम्राज्य-निर्माण के एक नए चरण को चिन्हित किया और कश्मीर को उत्तर भारत के विभिन्न राज्यों के बीच एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाया। उनकी सेना को इतिहास में इस कार्य के लिए अधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई। हालांकि उन्होंने कला, संस्कृति और वास्तुकला को बढ़ावा देकर इस क्षेत्र को समृद्ध करने मे भी महत्पूवर्ण भूमिका निभाई। उनके समय के दौरान बारामुला घाटी लगातार बाढ़ ग्रसित रहती थी। वह पहले राजा थे जिन्हें यह अहसास हुआ कि घाटी के मुहाने एवं चट्टानों के पास स्थित गाद को साफ करने से पानी का बहाव तेज हो जाएगा। इससे घाटी[4] के अन्य हिस्सों में पानी का स्तर कम हो जाएगा।

चित्र 2 : राजा ललितादित्य के समय में बना प्रसिद्ध मार्तन्ड मंदिर
Source: https://www.holidify.com/places/anantnag/martand-sun-temple-sightseeing-4088.html

कश्मीर बौद्ध शिक्षा का एक केंद्र भी था। पहली शताब्दी में, सम्राट कनिष्क ने कश्मीर को एक प्रमुख बौद्ध परिषद् के स्थान के रूप में चुना, जिसमें 500 से अधिक भिक्षु और विद्वान शामिल थे। सर्वस्तिवाड़ा, महायान, माध्यिक और योगाचार के बौद्ध विद्यालय कश्मीर[5] में पूर्ण रूपेण विकसित थी। इसने दिगनाग, धर्मकीर्ति,

चित्र 3 : हर्वन बौद्ध मठ के अंश जहां राजा कनिष्क ने पहली शताब्दी में बौद्ध परिषद का आयोजन किया
Source: http://www.asisrinagar.com/kashmir-valley.html#4

चूंकि प्राचीन काल में कश्मीर में विभिन्न संस्कृतियों एवं दर्शनों का एक समागम था। यहाँ एक उच्च कोटि की विकसित वास्तुकला, शिल्पकला और मूर्तिकला भी थी। इसकी समृद्ध विरासत मंदिरों के अवशेषों में देखी गई तथा मूर्तियों में स्पष्ट दिखाई देती है। मार्तण्ड सूर्य मंदिर कश्मीर के सबसे प्राचीन और सबसे बड़े शिला निर्मित मंदिरों में से एक हैं। इसमें चित्रकला एक समृद्ध परंपरा भी थी, जिसका उपयोग मंदिरों की दीवारों[7] को सजाने के लिए किया गया होगा। इन चित्रों के कुछ अंश जो विध्वंस होने के बाद भी शेष रहे वे 8वीं शताब्दी में गिलगित से लाए गए। पूरे मध्य एशिया में कश्मीरी कारीगरों[8] की मांग थी। तिब्बती विद्वान रिनचेन सांगपो विनितदेव और धर्मोत्तर जैसे प्रसिद्ध बौद्ध तर्कशास्त्रियों को फलने-फूलने का अवसर प्रदान किया। मध्य एशिया में बौद्ध धर्म के प्रचार में कश्मीरियों का महत्वपूर्ण योगदान था। यह बौद्ध और संस्कृत शिक्षा का एक ऐसा केंद्र बन गया, जहां कई विद्वान धर्मग्रंथों को पढ़ाने, अनुवाद करने और समझने के लिए आते थे। उनमें से एक कुमारजीव ने 100 से अधिक बौद्ध धर्मग्रंथों का चीनी भाषा में अध्यापन और अनुवाद किया। जिसने चीनी बौद्ध विचार को प्रभावित भी किया।[6]

Shri Amit Kumar
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

कला और संस्कृति

चित्र 4 : मामल मंदिर का इतिहास
Source: http://speakingstones1.blogspot.com/2017/01/ancient-mamal-

Shri Ashvni Kumar Kaochi
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

(950-1055 ई.) ने अपनी जीवनी में कश्मीर पर अपनी सेवाओं को उल्लेखित करते हुए यात्राओं का विवरण दिया है।

सांगपो को पश्चिमी तिब्बत में 75 कुशल कश्मीरी कारीगरों की मदद से 108 मंदिरों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है। नाटक और संगीत के क्षेत्र में भी कश्मीर का विशेष स्थान था, जिसे भरत मुनि ने अपनी कृति 'नाट्यशास्त्र' में लिखा है। इस कृति में विभिन्न रसों के बारे में बताया गया है जिसमें 108 मुद्रायें दी गईं हैं। भरत द्वारा लिखित एकल नाटक 'भान' आज भी कश्मीर में भानपाथर (संस्कृत में भानपत्र)[9] नामक समूहों द्वारा किया जाता है। अभिनवगुप्त, एक प्रसिद्ध दार्शनिक और 10वीं शताब्दी के ऋषि ने भरत मुनि के कार्य को स्पष्ट किया और कश्मीरी शैव सम्प्रदाय पर भी विस्तार से लिखा। कई महान कश्मीरी संतों ने दार्शनिक और वैज्ञानिक लेखन के लिए भी योगदान दिए जो समृद्ध प्राचीन विद्वानों के कार्य का अभिन्न अंग है। उनमें से एक प्रमुख नाम ऋषि पतंजलि का भी है जिन्होंने योग सूत्र और आयुर्वेद के लेखन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

चित्र 5 : श्रीनगर के पास पंडरेथन मंदिर में भगवान गणेश की मूर्ति
Source: http://indiafacts.org/wp-content/uploads/2016/12/Un-ed-9.png

चित्र 6 : 10वीं शताब्दी के महान दार्शनिक अभिनवगुप्त अपने शिष्यों के साथ
Source:http://www.lakshmanjooacademy.org/abhinavagupta_masters/#.XGyeGKIzbIU

कश्मीर में इस्लाम का आगमन

7वीं शताब्दी[10] में पैगम्बर मोहम्मद के समय भारत में इस्लाम धर्म का उदय हुआ। 629 ई.[11] के आसपास एक हिंदू राजा द्वारा भारत में पहली मस्जिद का निर्माण कराया गया जो कि केरल के कोच्चि के निकट स्थित चेरामन जुमा मस्जिद के नाम से जानी जाती है। राजनीतिक इस्लाम ने 8वीं सदी से मुस्लिम आक्रमणकारियों के आगमन के साथ भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। मोहम्मद गजनी ने कश्मीर पर एक विशाल सेना के साथ सन् 1015 ई. तथा 1021 ई. में पीर पंजाल दर्रे से होते हुए हमला किया। हालांकि उसे कड़े विरोध का सामना करना पड़ा और वापस लौटना पड़ा।[12] 1305-24 ई. के बीच राजा सहदेव (सिम्हा) के शासन के समय, जुल्फ कादिर खान उर्फ डुल्च जो चंगेज खान का वंशज था, ने कश्मीर पर 60 हजार सैनिकों तथा घुड़सवार दल के साथ हमला किया, और स्थानीय लोगों के बीच खौफ पैदा किया। आठ महीने के छोटे प्रवास के दौरान उसने कई लोगों को इस्लाम धर्म अपनाने को विवश किया। डुल्च 50 हजार ब्राह्मणों को बंदी बनाकर अपने साथ ले गया, परंतु देवसर दर्रे के पास एक बर्फीले तूफान में सभी मारे गए। यह वह समय था जब तीन बाहरी लोग घाटी में आए थे। स्वात

चित्र 7 : सिकन्दर शाह मीर ने 1389 से 1413 ई. तक कश्मीर पर शासन किया और बुतशिकन के नाम से कुख्यात हुआ उसने कई मंदिरों धर्मशालाओं और आश्रमों को विध्वंस किया

Shri Awdesh Kumar Yadav
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

का शाह मीर प्रसिद्ध फुर शाह का पोता था, इसलिए उसे राजा द्वारा संरक्षण और रियायत दी गई थी। एक तिब्बती राजकुमार रिंचन शाह, जो अपने ही राज्य में हार गया था और एक भगोड़ा भी था, राजा ने उन्हें आश्रय दिया। दार्दिस्तान का शासक लांकेर चाक भी शरणार्थी बनकर कश्मीर आया और राजा के द्वारा संरक्षण प्राप्त किया डुल्च के आक्रमण के दौरान राजा सहदेव किश्तवाड़ भाग गए। इससे तीनों बाहरी लोगों और राजा के मंत्री राम चंद के बीच शक्ति संघर्ष पैदा हो गया। चतुर रिंचन शाह ने राज्य को हड़पने के लिए शेष लोगों को धोखा दिया। रिंचन शाह ने इस्लाम धर्म अपना लिया और सदर-उद-दीन की उपाधि धारण कर ली। कश्मीर के पहले मुस्लिम शासक के रूप में, अपने धर्म परिवर्तन करने के बाद शाह ने हिंदुओं को प्रतिशोध के मनोभाव से प्रताड़ित किया। हिंदू संस्कृति में निहित उदारता और धार्मिक सहिष्णुता घाटी को विघटन और आक्रांताओं के प्रहार से नहीं रोक सकी।[13]

कश्मीर में इस्लाम, एक पंथ, पूजा-पद्धति और राजनैतिक सत्ता के रूप में स्थान ले चुका था। रिंचन शाह के निधन के पश्चात शाह मीर जो पहले से ही राजशाही की शक्ति संरचना में उलझा हुआ था, सिंहासन को संभाला। उसने खुद को 1343 ईस्वी में शम्स-उद-दीन् की उपाधि धारण कर स्वयं को शासक घोषित कर लिया। सिकंदर शाह जिसे सिकंदर बुतशिकन के नाम से भी जाना जाता है, उसने 1394-1417 ई.[14] के बीच कश्मीर पर शासन किया। उसके शासनकाल में पूजा, नृत्य, कला और यहां तक कि माथे पर तिलक लगाना भी वर्जित हो गया था। उसने क्षेत्र के कई मंदिरों का विध्वंस किया, जिनमें मार्तंड, अवंतीपुरा, पंडरेथन, गणेशबल और बिजबिहारा[15] आदि हैं। अपने पिता के नक्शेकदम पर चलते हुए सिकंदर के बेटे अली शाह ने भी कश्मीर में हिंदुओं पर खूब अत्याचार किए। 1489 ई. में गद्दी पर आए फतेह शाह ने 24 हजार ब्राह्मण परिवारों को इस्लाम में परिवर्तित कर दिया। मुगल वंश के शासनकाल में भी हिंदुओं पर अत्याचार जारी रहे। औरंगजेब ने हिंदुओं पर जजिया कर और अन्य कई तरह के कर लगाए।

1752 में अहमद शाह अब्दाली ने मुगलों से राज्य छीन लिया, और अफगान शासको नें लगभग 70 वर्षों तक कश्मीर पर शासन किया। 1819 में महाराजा रणजीत सिंह नें कश्मीर को अफगानों से जीत लिया और सिख शासन 27 वर्षों तक चला। बाद में ईस्ट इंडिया कंपनी ने अमृतसर की संधि पर हस्ताक्षर होने से 75 लाख[16] रुपये के भुगतान पर जम्मू कश्मीर को डोगरा राजा गुलाब सिंह को हस्तांतरित कर दिया गया।

26 अक्टूबर 1947- अतीत की वर्तमान पर अधिछाया

19 सितंबर 1925 को महाराजा हरि सिंह जम्मू कश्मीर साम्राज्य के सिंहासन पर आसीन हुए। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन अपने निर्णायक मोड़ की ओर बढ़ रहा था। इसी के साथ भारत के भीतर की 565 रियासतों को भारत या पाकिस्तान में शामिल होने या स्वतंत्र रहने के लिए पूछा गया। सभी रियासतों में से जम्मू कश्मीर भी क्षेत्रफल के रूप में बड़ी रियासत थी। मुस्लिम लीग और मोहम्मद अली जिन्ना ने पहले ही धार्मिक आधार पर देश को ध्रुवीकरण की ओर मोड़ दिया। जम्मू कश्मीर में शेख अब्दुल्ला ने मुस्लिम समुदाय को लामबंद किया। और 1946[17] में महाराजा के खिलाफ 'भारत छोड़ो' अभियान चलाया। शेख अब्दुल्ला और प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के बीच की निकटता ने भी जम्मू कश्मीर राज्य के भारतीय संघ में विलय के विरूद्ध कार्य किया। इससे महाराजा हरि सिंह संशय की स्थिति में पड़ गए थे।

हरि सिंह ने व्यापार, संचार और परिवहन विभागों को अक्षुण्ण रखने के लिए नवगठित पाकिस्तान के साथ 'स्टैंडस्टिल समझौते' पर हस्ताक्षर किए।[18] हालांकि, जम्मू कश्मीर सरकार ने पाकिस्तान से शिकायत की - कि वह यात्रियों के बाधारहित आवागमन सहित भोजन, पेट्रोल और अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति में कटौती कर रहा है। महाराजा ने भारत सरकार से राज्य में संकट से उबरने के लिए पांच हजार गैलन पेट्रोल तत्काल उपलब्ध कराने का अनुरोध किया। जम्मू कश्मीर के प्रधान मंत्री मेहर चंद महाजन ने पाकिस्तान द्वारा स्टैंडस्टिल समझौते के उल्लंघन के बारे में अंग्रेजों से शिकायत की। जम्मू कश्मीर राज्य द्वारा पाकिस्तान की सरकार को एक विरोध पत्र भी भेजा गया था।

चित्र 8 : जम्मू कश्मीर के राजा हरि सिंह द्वारा हस्ताक्षरित 'विलय पत्र'

Source: http://facts-about-kashmir.blogspot.com/2008/

Shri Bablu Santra
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

22 अक्टूबर 1947 का वह काला दिन था जब जम्मू कश्मीर की रियासत पर अचानक पाकिस्तान प्रायोजित छद्म हमलावरों ने धावा बोल दिया। इन छद्म हमलावरों में अफरीदी, महसूद और वजीर शामिल थे जो लगभग 300 लॉरियों में पाकिस्तान से आए थे। ये कबिलाईयों के रूप में थे। इनमें अधिकांश पाकिस्तानी सैनिक थे जो 'छुट्टी' पर आए जिन्हें कश्मीर के भूगोल से पूर्ण रूप से परिचित थे। वे झेलम घाटी सड़क से मुजफ्फराबाद तक आए। मुजफ्फराबाद में तैनात राज्य बल बटालियन का नेतृत्व लेफ्टिनेंट कर्नल नारायण सिंह कर रहे थे। जम्मू कश्मीर की सेना में मुसलमानों के साथ-साथ डोगरा भी शामिल थे। और लगभग सभी मुस्लिम सैनिक बटालियन में मौजूद थे। राज्य सेना के सभी मुस्लिम सैनिको ने कमांडिंग ऑफिसर और उनके सहायकों को गोली मारने के बाद आक्रमणकारियों का साथ देना शुरू कर दिया। कुछ दिन पहले ही महाराजा ने लेफ्टिनेंट कर्नल नारायण सिंह से पूछा था कि क्या उन्हें अपनी बटालियन के मुस्लिम सैनिकों की वफादारी पर विश्वास है। जिस पर उन्होंने जवाब दिया ''डोगरा से अधिक''।[19]

चित्र 9 : जम्मू कश्मीर राज्य के भारत में विलय हेतु सरदार पटेल और राजा हरि सिंह के बीच वार्ता
Source: http://historium.tumblr.com/post/172352675220/sardar-vallabhbhai-patel-indian-freedom-fighter

जब राज्य बलों के प्रमुख, ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह ने सुना कि राज्य की सेना के लगभग सभी मुसलमान विद्रोही हो गए और हमलावरों में शामिल हो गए हैं तो वे 150 सैनिकों के साथ उरी चले गए। उन्होंने दो दिनों से अधिक समय तक आक्रमणकारियों से मोर्चा लिया और अंतिम सुरक्षा कार्रवाई के रूप में उरी ब्रिज को नष्ट कर दिया और इसी प्रक्रिया में वे अंततः शहीद हो गए।[20]

हमलावरों ने महुरा पावर हाउस पर हमला किया और श्रीनगर में अंधेरा कर दिया। वे 26 अक्टूबर 1947 को ईद मनाने के लिए श्रीनगर पहुंचने का लक्ष्य बना रहे थे। महाराजा हरि सिंह द्वारा हताशा में नई दिल्ली को सूचित किया गया कि जम्मू कश्मीर में स्थिति बिगड चुकी है। सरदार वल्लभ भाई पटेल के सहयोगी वी पी मेनन को स्थिति का आकलन करने के लिए तुरंत श्रीनगर भेजा गया। मेनन अगले ही दिन दिल्ली वापस आ गये क्योंकि आक्रमणकारी श्रीनगर के बाहरी इलाके तक पहुंच गए थे। उन्होंने तुरंत स्थिति की गंभीरता के बारे में रक्षा समिति को सूचना दी। महाराजा हरि सिंह

राज्य को हमलावरों से बचाने के लिए भारतीय संघ में शामिल होने के लिए उत्सुक थे। उन्होंने गवर्नर जनरल को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने भारतीय अधिराज्य में शामिल होने और अंतरिम सरकार बनाने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने गवर्नर जनरल को सूचित किया कि वे सरकार चलाने में जम्मू-कश्मीर के वर्तमान प्रधान मंत्री मेहर चंद की मदद करने के लिए शेख अब्दुल्ला से कहेंगे। तभी जम्मू-कश्मीर के भारतीय संघ में विलय अधिनियम पर महाराजा हरि सिंह द्वारा हस्ताक्षर किए गए। और भारतीय सेनाओं ने बहुत कम समय में कश्मीर को हमलावरों से मुक्त कराने के लिए खुद को प्रशस्त किया। 27 अक्टूबर 1947 को खराब संचार व्यवस्था और नगण्य खुफिया जानकारी के साथ दुश्मन पर ऑपरेशन शुरू हुआ। वायु सेना और सिविल एयरलाइंस के पायलटों ने सराहनीय रूप से एक अभूतपूर्व काम किया। माउंटबेटन जो दक्षिण पूर्व एशिया के सुप्रीम एलाइड कमांडर भी रह चुके थे, उन्होंने इस कार्यवाही को देखा और माना कि इतने कम समय में उन्होंने इस तरह की समन्वयित कार्रवाई कभी नहीं देखी थी।

Shri Bhagirath Singh
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

भारतीय सेना ने आक्रमणकारियों को हराया, हालांकि इस लड़ाई में हमारे जवान भी शहीद हुए। जब भारतीय सेना बारामूला पहुंची तो उन्होंने 14 हजार की आबादी में से केवल 1000 को ही पाया। सभी हिंदू और सिख आबादी या तो मारे गए या हमलावरों द्वारा बन्दी बना कर ले जाये गए। कस्बे में एक भी हिंदू या सिख महिला नहीं बची थी।

इस बीच जिन्ना हताश हो रहे थे और अपनी सेना को श्रीनगर भेजना चाहते थे। फील्ड मार्शल औचिनलेक ने लाहौर के लिए उड़ान भरी और जिन्ना को बताया कि इस तरह की हरकत पाकिस्तान में तैनात सभी ब्रिटिश बलों को बाहर करने के लिए मजबूर करेगी क्योंकि जम्मू कश्मीर

चित्र 10 : अक्टूबर 1947 : श्रीनगर में रंगरेथ हवाईपट्टी पर उतरते भारतीय सैनिक
Source: http://kashmirnarrator.com/1947-indo-pak-war-kashmir-eyes-man-saw-close/

चित्र 11 : जम्मू कश्मीर का आंकड़ा विस्तृत मानचित्र के साथ

Shri C. Shivachandran
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

कानूनी रूप से भारत का हिस्सा था। इसके बाद जिन्ना ने कश्मीर मुद्दे पर चर्चा के लिए माउंटबेटन और नेहरू को लाहौर आमंत्रित किया। इस प्रस्ताव पर सरदार पटेल की असहमति भी थी। नेहरू और माउंटबेटन वार्ता के लिए साथ जाने पर सहमत थे। इन मतभेदों पर महात्मा गांधी से परामर्श लिया गया था, लेकिन इसी बीच पाकिस्तान ने एक बयान जारी कर कश्मीर के भारत विलय को धोखाधड़ी कहा और इसे अवैध बताया।

इन हमलावरों को कश्मीर के एक बड़े हिस्से से वापस भगाने में हमारे सुरक्षा बलों द्वारा अनुकरणीय साहस दिखाया गया। हमारे वीर सैनिकों की वीरता के कई किस्से हैं जिनका सार्वजनिक मंचों पर कभी भी कोई उल्लेख नहीं होता है। मेजर जनरल थिमैय्या द्वारा लेह लद्दाख की सफल पुनर्प्राप्ति और एक साल के प्रतिरोध के बाद पुंछ को राहत देने के लिए मेजर जनरल आत्मा सिंह और उनके लोग कुछ ऐसे उदाहरण हैं, जो कश्मीर के इतिहास में हमारे सशस्त्र बलों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाते हैं और कश्मीर अभियान को ''सेना की प्रतिबद्धता'' के रूप में संदर्भित करते हैं।

कश्मीर में सीमापार से प्रायोजित आतंकवाद: उदय एवं प्रभाव

भारतीय सेना के हस्तक्षेप के बाद पाकिस्तान प्रायोजित घुसपैठियों [21] को मिली बड़ी हार इस्लामिक देश पाकिस्तान के लिए राष्ट्रीय शर्म की बात बन गई। पाकिस्तान जैसे देश के लिए, जिसकी पूरी नींव भारत[22] से घृणा करने की अवधारणा पर आश्रित है, वह इस तथ्य को स्वीकार नहीं कर सका कि भारत की अखंडता को चुनौती देने का उनका पहला प्रयास एक हिंसक अंत के साथ विफल हो गया। इसके बाद घृणा और उपद्रवी प्रवृत्ति के उनके उन्मादवाद से उत्प्रेरित होकर,

चित्र 12 : भारतीय सेना के 4 सिख रेजिमेन्ट द्वारा 1965 में लाहौर की पुलिस चौकी पर कब्जा
Source: http://indianarmy.nic.in/writereaddata/documents/Articles1965/Kanwaljitsingh230915.pdf,GODL-India, https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=47119717

Shri Guru H
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ पाकिस्तान ने इस कार्यप्रणाली को दोहराया। 1965 के भारत-पाक युद्ध, जिसे इस्लामिक रिपब्लिक द्वारा ऑपरेशन जिब्राल्टर कहा गया, को पाकिस्तानी सेना के एक अधिकारी मेजर-जनरल अख्तर हुसैन मलिक द्वारा पाकिस्तानी और अन्य सैन्य इतिहासकारों के अनुसार बनाया गया था। भारत की संचार प्रणाली को नष्ट करने के लिए सशस्त्र गुरिल्ला बैंड का उपयोग करना, और भारतीय सेना को बांधने के लिए नोडल बिंदुओं पर हमला करना था। जिब्राल्टर फोर्स की संख्या का अनुमान 7 हजार से लेकर 20 हजार[23] तक थी। पाकिस्तानी सेना और उनके समर्थको को 1947 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान जिस हार का सामना करना पड़ा था पुनः उसी परिस्थिति का सामना करना पड़ा। भारतीय बलों द्वारा शुरू किए गए जवाबी हमले ने घुसपैठ करने वाली ताकतों को पूरी तरह से नेस्तनाबूद कर दिया था। भारतीय सेनाएं अंतर्राष्ट्रीय सीमा को पार कर लाहौर के निकट तक पहुंच गईं। इसके बाद की घटनाएँ इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में दर्ज हैं।

लगातार असफलताओं के बाद भी पाकिस्तान का इस्लामी गणतंत्र अपनी नापाक गतिविधियों पर कायम रहा, और भारत और पाकिस्तान ने क्रमशः 1971 और 1999 में दो और युद्ध लड़े। इन दोनों ही युद्धो में पाकिस्तानी सेना को मुंहकी खानी पड़ी और बड़े पैमाने पर कार्यवाहियों का सामना भी करना पड़ा। पारंपरिक युद्धों में हार की इन शृंखलाओं से बौखला कर पाकिस्तान ने अपनी नीति में बदलाव किया और कश्मीर को अस्थिर करने के अपने इरादों पर पुनः निवेश करना शुरू किया। उग्रवाद की उत्पत्ति का पता 1980 के दशक में लगाया जा सकता है, जब जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) पहली बार घाटी में उभर कर आया था। इसी समय इस्लामिक आतंकवादी समूहों ने तेजी से अपना प्रचार-प्रसार करना शुरू कर दिया। ये समूह सोवियत-अफगान युद्ध की विरासत थे जो हाल ही में समाप्त हो गए थे। दुनिया भर में जिहाद को अंजाम

चित्र 13 : हिज्बुल मुजाहिदीन गुट के आतंकी
Source: http://www.thenorthlines.com/hizbul-mujahideen-recruitment-network-busted-in-jammu/

देने के लिए निकले इन कट्टरपंथी समूहों ने घाटी को आतंक और उन्माद से ग्रस्त कर दिया था। पाकिस्तान अधिकृत जम्मू कश्मीर में रह कर उन्होंने पूरे पाकिस्तान में अपनी गतिविधियों के लिए वित्तपोषण और भर्ती के लिए उचित महौल बनाया।[24] पाकिस्तानी एजेंसियों ने कश्मीर में फाल्ट लाइनों की खोज की और अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रचार-प्रसार शुरू किया, जो कि जेकेएलएफ के तहत ''कश्मीर बनेगा खुदमुख्तार'' (कश्मीर संप्रभु होगा) के रूप में शुरू किया गया था, जो जल्द ही कश्मीर में ''कश्मीर बनेगा पाकिस्तान'' (कश्मीर पाकिस्तान का हिस्सा होगा) में तब्दील हो गया। पाकिस्तान समर्थक विचारधारा वाले संगठन हिज्ब-उल मुजाहिदीन का प्रभाव 1991 से शरू होता है।[25] पाकिस्तानी सेना की इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) - जो 1980 के दशक के अंत से कश्मीर विद्रोह को घातक हथियार और प्रशिक्षण प्रदान कर रही थी, अचानक जेकेएलएफ की सहायता में उसने कटौती कर दी।[26] जम्मू कश्मीर में अन्य विरोधी गुटों को मजबूत करने के लिए ऐसा किया जा रहा है। कश्मीर में उग्रवाद फैलाने में पाकिस्तान की भागीदारी पूर्व पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ द्वारा उजागर की गई थी। जब उन्होंने 90 के दशक में लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकवादी संगठनों का समर्थन करने और प्रशिक्षण देने में पाकिस्तान की भूमिका को स्वीकार किया था।

Shri Hemraj Meena
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

चित्र 14 : ओसामा बिन लादेन के एबटाबाद परिसर का सी.आई.ए. द्वारा लिया गया आकाशीय चित्र
Source: Wikimedia

उन्होंने कहा, ''उस समय लश्कर-ए-तैयबा और 11 या 12 अन्य संगठनों का गठन किया गया था। हमने उनका समर्थन किया और उन्हें प्रशिक्षित किया क्योंकि वे कश्मीर में लड़ रहे थे ...''

- जनरल परवेज मुशर्रफ (रविवार 25 अक्टूबर, 2015 को दुनिया न्यूज को दिए एक साक्षात्कार

चित्र 15 : प्रशिक्षण शिविर में अलकायदा के आतंकवादी
Source: https://www.dnaindia.com/india/report-hizbul-mujahideen-vs-al-qaeda-split-wide-open-in-kashmir-terror-groups-2546075

में)।[27]

मुशर्रफ की इस स्वीकारोक्ति से पहले ही इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ पाकिस्तान को तब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कड़ी भर्त्सना का सामना करना पड़ा था, जब पूर्व ब्रिटिश विदेश सचिव जैक स्ट्रॉ ने हाउस ऑफ कॉमन्स में इस पर बहस करते हुए आतंकी गतिविधियों को प्रायोजित करने में पाकिस्तान का हाथ बताया और कहा कि ''उनकी सरकार यह स्वीकार करती है कि आईएसआई निदेशालय और लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद, हजरत-उल मुजाहिदीन जैसे इन आतंकी संगठनों के बीच एक घनिष्ठ संबंध रहा है।''[28]

Shri Jaimal Singh
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

यह इतिहास में संभवतः पहला उदाहरण था जब किसी विदेशी सरकार ने कश्मीरी आतंकवादियों[29] एवं पाकिस्तान के आईएसआई की प्रत्यक्ष भागीदारी को इंगित किया था, और यह संदेह से परे स्थापित किया था कि मुख्य रूप से अफगानिस्तान, सऊदी अरब और पाकिस्तान से विदेशी नागरिकों ने आतंकी संगठनों का निर्माण किया। कश्मीरी उग्रवाद[30] में इस्लामी रंग को बनाए रखने का लक्ष्य एवं कश्मीर में कट्टरपंथी तत्वों का उदय एक चिंता का विषय है जिसे युद्धस्तर पर निपटाया जाना चाहिए। इस्लाम के कट्टरपंथी संप्रदाय, जैसे वहाबीवाद और सलाफीवाद घाटी में इस्लाम के मूल कश्मीरी संस्करणों की जगह ले रहे हैं। क्षेत्र

चित्र 16 : कश्मीर में आई.एस.आई.एस. के झंडे
Source: https://www.dnaindia.com/india/report-slideshow-in-praise-of-isis-surfaces-in-kashmir-in-new-2436465

में आईएसआईएस और अन्य कट्टरपंथी संगठनों का उदय एक और चुनौती है जिससे निपटने के लिए एक लोहे जैसे मजबूत हाथ की आवश्यकता है। तहरीक-उल-मुजाहिदीन के एक आतंकवादी के अंतिम संस्कार जुलूस के दौरान लगाए गए नारे विशेष रूप से कश्मीर में कट्टरपंथ की गहराई को उजागर करते हैं, जहां ''न हुर्रियत वाली शरीयत, न हुर्रियत वाली आजादी, कश्मीर बनेगा दारुल इस्लाम'' (न हुर्रियत के प्रकार की शरीयत, न ही हुर्रियत वाली आजादी, कश्मीर बनेगा इस्लामिक राज्य) के नारे लगते हैं।[31]

Shri Jeet Ram
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

उग्रवाद के कारण कश्मीरी हिंदुओं की सबसे जघन्य हत्याएं और घाटी से उनके पलायन को ठीक से संबोधित नहीं किया गया है। घाटी में आतंकी कार्यकलापों की वजह से हजारों लोगों की जान चली गई है। 1995 में कश्मीर में अनंतनाग जिले से छह विदेशी पर्यटकों का अपहरण कर लिया गया था। एक का सिर काट दिया गया, एक फरार हो गया और अन्य चार लापता हो गये या संभवतः उन्हें मार दिया गया। अमरनाथ यात्रा में 30 हिंदू तीर्थयात्रियों की वर्ष 2000 में जघन्य हत्या कर दी गई थी। अक्टूबर 2001 में श्रीनगर विधान सभा में एक फिदायीन हमला हुआ था जिसमें 38 नागरिक मारे गए थे। निश्चय ही श्रीनगर के कासिम नगर बाजार में लश्कर-ए-तैयबा के सशस्त्र आतंकवादियों ने हथगोले फेंके और 2002 में 27 नागरिकों की हत्या की गई थी। उसी साल, जम्मू के रघुनाथ मंदिर में कई फिदायीन हमले हुए। इन हमलों में 30 से अधिक लोग मारे गये और कई घायल हुए। इसके अतिरिक्त, संयुक्त जिहाद परिषद् (UJC) के नाम से एक इस्लामी आतंकवादी गठबंधन और जनवरी 2010 के मध्य में पूर्व आईएसआई प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल हामिद गुल की अध्यक्षता में मुजफ्फराबाद में आतंकवादियों के लिए एक सार्वजनिक बैठक में खुलेआम एक जुबान में जिहाद (कश्मीर के लिए इस्लामी जिहाद) के लिए स्पष्ट आह्वान किया गया था[32]। पूर्व पुलिस महानिदेशक के राजेंद्र कुमार ने 2014 में कहा कि ''लगभग 150 -160 आतंकवादी कश्मीर घाटी में काम कर रहे हैं और उनमें से अधिकांश विदेशी हैं।''[33] इस बयान ने घाटी में विदेशी इस्लामी कट्टरपंथी तत्वों की उपस्थिति को और अधिक वैध कर दिया,

चित्र 17 : सुरक्षाबलों पर आक्रमण करने के लिए 'पत्थरबाजी' अलगाववादियों की एक नई रणनीति है
Source: https://www.financialexpress.com/india-news/hizbul-mujahideen-asks-kashmiri-pandits-to-return-to-valley/424045/

वे पहले स्थानीय युवाओं को अलगाववादी लकीर पर उकसाते हैं और फिर कट्टरपंथी इस्लामिक योजना को चलाने के लिए उन्हें पूर्णकालिक उग्रवादी बना देते हैं।

Shri Koushal Kumar Rawat
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

1980 के दशक में उग्रवाद की शुरुआत से कट्टरपंथी तत्व जिनमें ज्यादातर अफगान युद्ध के अवशेष के रूप में शामिल थे, घाटी में तेजी से विकसित हुए।[34] इसका प्रभाव ऐसा था कि घाटी में फिदायीन गतिविधियों में अचानक वृद्धि हुई और 1999 से 2002 तक, एक छोटी अवधि के भीतर लगभग 55 ऐसे हमलों ने कश्मीर को झकझोर दिया। इस दौरान भारतीय सुरक्षा बलों के लगभग 161 सैनिकों ने शहादत प्राप्त की। आरंभिक फिदायीन हमलों को पाकिस्तान से बाहर लश्कर-ए-तैयबा द्वारा प्रायोजित किया गया था और इसका नेतृत्व उसके पाकिस्तानी आकाओं द्वारा किया जा रहा था।[35] इन्होंने जिहादी संगठनों को प्रशिक्षित किया और इन संगठनों ने कश्मीर के भीतर संगठित होकर इस्लामी खिलाफत के लिए जिहाद को जारी रखा।[36] भारतीय सुरक्षा बलों द्वारा पकड़े गए और विभिन्न जेलों में रखे गए विदेशी आतंकवादियों ने भी स्थानीय युवाओं को कट्टरपंथी बनाने में नापाक भूमिका निभाई। इन जेलों में सलाफी साहित्य आसानी से उपलब्ध होता था, और इन सभी कारकों ने स्थानीय लोगों में कट्टरवाद को प्रचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[37] मध्य-पूर्व में कट्टरपंथी कश्मीरी अप्रवासियों ने भी हवाला के माध्यम से कट्टरपंथी वहाबी और सलाफी साहित्य की सुविधा प्रदान की। इसके परिणामस्वरूप कश्मीर की सड़कों पर सलाफी और वहाबी साहित्य मुफ्त में वितरित किए जाते रहे हैं, जो दार-उल-इस्लाम के एजेंडे को और मजबूत करते हैं।[38] इन वहाबी और सलाफी संप्रदायों द्वारा किए गए व्यवहार के स्तर ने दुनिया भर में एक व्यापक बहस पैदा की है और जैसा कि 2013 में यूरोपीय संघ की संसद द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट में सऊदी अरब जैसे कुछ देशों की भूमिका का खुलासा किया गया और वैश्विक आतंकवाद को बढ़ावा देने में इन संप्रदायों की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर किया गया है। रिपोर्ट में कुछ ऐसे संगठनों की पहचान भी की गई है जो अंतर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संस्थाओं की आड़ में कट्टरपंथ को बढ़ावा दे रहे हैं। यूरोपीय संघ की संसद द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट भी सऊदी अरब पर इन गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से वहाबी एजेंडे को बढ़ावा देने के लिए 10 बिलियन से अधिक का निवेश करने का आरोप लगाती है। इनमें से कुछ संगठन[39] जैसे कि इस्लामिक इंटरनेशनल रिलीफ संगठन भारत में भी सक्रिय है।[40] इसलिए यह आवश्यक है कि वर्तमान समय में इन संगठनों की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी की जाए और समय-समय पर भारतीय सुरक्षा एजेंसियों द्वारा उनके संचालन के तौर तरीकों को जांचा जाए। इस बढ़ी हुई कट्टरता ने आतंकवादी संगठनों को इस क्षेत्र में अपनी गतिविधियों को बढ़ाने में मदद की है और हाल ही में फिदायीन हमलों में वृद्धि उसी का प्रमाण है।[41]

इस्लामी कट्टरवाद का उदय

कश्मीर घाटी में पारंपरिक रूप से इस्लाम की नरम विचारधाराएं जैसे कि हनाफी, बरेलवी और कश्मीरी सूफीवाद प्रमुख थीं।[42] लेकिन 1980 के दशक के बाद कश्मीर घाटी में इस्लाम के कट्टरपंथी संप्रदायों में अचानक वृद्धि हुई है।

आज घाटी में विचारों की पारंपरिक धारायें दूर हो रही हैं और कट्टरपंथी तथा सऊदी-प्रेरित सलाफी एवं वहाबी संप्रदाय जिन्हें बेहतर रूप से अहले हदीस के रूप में जाना जाता है, तेजी से फेल रही हैं।[43] घाटी की नई मस्जिदों की बदलती वास्तुकला मुस्लिम आबादी की बदलती सांप्रदायिक गतिशीलता सबसे अधिक स्पष्ट रूप से दिख रही है।

चित्र 18 : चरारे-शरीफ मस्जिद जो कश्मीरी वास्तुकला से प्रभावित है।
Source: https://www.jktdc.co.in/Charar-e-Sharif.aspx

स्तूप प्रकार की छत वाली पहले की मस्जिदें, जो बौद्ध और हिंदू मंदिरों से प्रेरित थीं, उन्हें गुंबदों और मीनारों के नए रूप से बदल दिया जा रहा है और ये कट्टरपंथी समूह तेजी से पुरातनपंथी परंपराओं को लागू कर रहे हैं जैसे कि महिलाओं में पर्दा प्रथा जो घाटी में बड़े पैमाने पर नहीं थीं।[44] वहीं 1980 के दशक के अंत से यह बड़े पैमाने पर बढ़ी है। ऐसा करने में जमीयत-ए-अहले हदीस की भूमिका प्रमुख रही है। 1946 में इसकी स्थापना के बाद से यह संगठन लगातार विस्तारित हो रहा है

चित्र 19 : पाक अधिकृत जम्मू कश्मीर, कोली में अरबी वास्तुकला से प्रभावित मस्जिद

Shri Kulwinder Singh
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

जो औपचारिक रूप से खुद को एक गैर-राजनीतिक संस्था के रूप में पंजीकृत करने के बाद अब 700 से अधिक मस्जिदों और 125 स्कूलों का प्रबंधन और संचालन करता है।[45] दूसरी ओर, अधिकारिक सूत्रों ने अनुमान लगाया है कि कश्मीर में लगभग 7,500 मस्जिदें हैं और इनमें से 6,000 से अधिक हनाफी संप्रदाय की हैं और लगभग 200 समधर्मी सूफी मंदिरों से संबंधित हैं।[46] अहले हदीस, देवबंद और जमात के पास खैराती मदरसों के साथ-साथ लगभग 1,000 मस्जिदें हैं। इन मस्जिदों में अहले हदीस की हिस्सेदारी सबसे ज्यादा है।[47] ''अहले हदीस मस्जिदें'' आधुनिक साज-सज्जा और सुविधाओं के लिए प्रसिद्ध हैं और उनकी बढ़ती रौनक के साथ-साथ अहले हदीस मस्जिद की संख्या में दोगुनी वृद्धि हो रही हैं, खासकर पिछले दशक में। इस अवधि के दौरान अकेले कश्मीर घाटी को विदेशी दानदाताओं से दान के रूप में लगभग 10 से 100 करोड़ रुपये प्राप्त हुए हैं और इसमें सलाफी/वहाबी देश जैसे सऊदी अरब और कतर शीर्ष दाताओं में सबसे ऊपर हैं।[48] इन संप्रदायों की बढ़ती अपील ने अनुयायियों की संख्या में वृद्धि की है, और घाटी में साठ लाख मुसलमानों की कुल आबादी में से लगभग दस लाख अनुयायियों के होने का अनुमान है।[49] घाटी में प्रचलित उग्रवाद की प्रकृति भी बदल गई है, क्योंकि आतंकवादी अब तथाकथित स्वतंत्रता[50] के बजाय इस्लामी जिहाद के नाम पर लड़ रहे हैं और इस नव-जिहाद के नतीजे के रूप में कश्मीर में युवा सलाफिस्ट अरबी विशेषण को अपना रहे हैं।[51] समन्वयित रूप से कह सकते हैं कि उग्रवाद का बढ़ता स्वरूप साम्प्रदायिक हिंसा का आधार तैयार कर रहा है।[52] साम्प्रदायिक कलह 2012 में पलपोरा में फूटी जहां कुछ परिवार (जो हाल ही में सलाफी परिवर्तित) हनाफी सम्प्रदाय[53] में प्रचलित रीति-रिवाज की वैद्यता को लेकर झगड़े। तत्पश्चात, हनाफी समाज से वे अलग हो गए और उन्होंने अपने अनुसार मस्जिद स्थापित की।[54] इस विभाजन के फलस्वरूप पूरी घाटी में साम्प्रदायिक कलह बढ़ती रही और आगज़नी की घटनाएं पूरी वादी में दिखती रहीं। पारम्परिक इबादतखानों में से छह पूर्ण या आंशिक रूप से रहस्यमय ढ़ंग से आग लगने के कारण नष्ट हो गई। इनमें सबसे दुखद श्रीनगर दस्तगीर साहिब का इबादतखाना है।[55]

हिंदुओं का पलायन और नरसंहार - वैचारिक आक्रामकता की निरंतरता

कश्मीर ने सदियों से इस्लामी आक्रामकता देखी है। स्वतंत्रता के बाद से ही स्वदेशी हिंदू मतावलंबियों को सीमा पार से कबिलाई हमलावरों का सामना करना पड़ा है। इन हमलों में हजारों गैर-मुस्लिम मारे गए। कश्मीरी हिंदुओं को धार्मिक आधार पर बार-बार प्रताड़ित किया गया। सीमा पार से कश्मीरी युवाओं के कट्टरपंथीकरण के साथ अब बड़े पैमाने पर शांतिपूर्ण हिंदू अल्पसंख्यकों के खिलाफ खामोशी से विरोध का माहौल तैयार किया जा रहा है।

1986 में राज्य के मुख्यमंत्री रहे जी.एम. शाह ने इस्लामिक कट्टरपंथियों को राजनीतिक रूप से आगे बढ़ने का अवसर दिया। जैसा कि उन्होंने जम्मू कश्मीर के नए सचिवालय पर एक पुराने हिंदू मंदिर के परिसर के अंदर एक मस्जिद बनाने का फैसला किया, ताकि मुस्लिम कर्मचारियों द्वारा नमाज अदा की जा सके। जिसके परिणामस्वरूप हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच तीखी झड़प हुई एवं बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए। घाटी में वापस पहुंचने के बाद शाह ने इस घटना पर प्रतिक्रिया व्यक्त की। संवैधानिक पद पर आसीन होने के बावजूद उन्होंने घाटी में मुसलमानों के प्रति अपनी निकटता और

चित्र 20 : बंदुक के कुंदे की मार से मृत कश्मीरी बालक
Source: http://ikashmir.net/atrocities/index.html)

घनिष्ठता प्रदर्शित करते हुए ''इस्लाम खतरे मे है'' का नारा बुलंद किया। इस भड़काऊ बयान के प्रतिक्रिया स्वरूप कई कश्मीरी पंडितों की नृशंस हत्या हुई, उनकी संपत्तियों को लूट लिया गया या नष्ट कर दिया गया और उनके मंदिरों को अपवित्र करने के भरसक प्रयास किए गए। इन जघन्य कृत्यों में कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस पार्टी[56] के कार्यकर्ताओं की बढ़चढ़ कर भागीदारी रही। इससे हिंदू समुदाय इस कदर भयभीत हो गया जिसका वर्णन शब्दों से परे है।

हिंदू पंडितों को डराने-धमकाने की घटनाएं लगातार होती रही हैं। जेकेएलएफ जैसे कट्टरपंथी मुस्लिम संगठनों ने हिंदुओं को निशाना बनाया। 14 सितंबर 1989 को एक वकील और समुदाय के प्रमुख सदस्य पंडित टीका लाल टपलू की जेकेएलएफ द्वारा श्रीनगर में उनके घर के सामने हत्या कर दी गई थी। यह हत्या दिनदहाड़े हुई थी, लेकिन कोई प्रत्यक्षदर्शी गवाह नहीं मिला। अंततः हत्यारे कभी पकड़े नहीं जा सके। इसके बाद सेवानिवृत्त न्यायाधीश नीलकंठ गंजू को निशाना बनाया गया जिन्होंने मकबूल भट्ट को मृत्युदंड दिया था। उनका गोलियों से छलनी शरीर काफी देर तक सड़क पर पड़ा रहा लेकिन किसी को उसके पास

चित्र 21 : नदी मार्ग, दक्षिण कश्मीर में बच्चों सहित 24 कश्मीरी पंडितों की सन् 2003 में हत्या

Source : https://www.thehindu.com/thehindu/2003/03/25/stories/2003032505750100.htm

नाम : तेज कृष्ण राजदान (आयु : 30 वर्ष)

निवासी : याचगम (जिला बडगाम)

पेशा : केंद्रीय सेवा

हत्या की तारीख : 12.2.1990

राजदान पंजाब में कार्यरत थे। वे अपने परिवार से मिलने छुट्टी पर श्रीनगर आए थे। उनका एक पुराना मुस्लिम मित्र जो कश्मीर में उनके साथ काम करता था, वह उस दिन उनसे मिलने आया। दोनों लाल चौक के लिए एक मिनी बस में सवार हुए। जब मेटाडोर बस गाओ कदल में रुकी तो राजदान के साथी ने अचानक पिस्तौल निकाली और उनके सीने में गोली मार दी जिससे उनकी मृत्यु हो गई। वह इतने पर भी नही रूका और राजदान को वाहन से बाहर खींच लिया। उसने अन्य यात्रियों को उकसाते हुए राजदान के शव को बार-बार लात मारने के लिए उन्मादी किया। अत्यंत निर्दयता से उनके शव को घसीटते हुए निकटतम मस्जिद में ले जाया गया और पुलिस को शव लेने के लिए आने से पहले घंटों तक शव को प्रदर्शन हेतु रखा गया।

Source: http://ikashmir.net/atrocities/11.html

THE HINDU

Online edition of India's National Newspaper
Friday, Apr 11, 2003

National

News: Front Page | National | Southern States | Other States | International | Opinion | Business | Sport | Miscellaneous | Advts: Classifieds | Employment | Obituary |

National

'LeT behind Nadimarg massacre'

By Shujaat Bukhari

The Anantnag district commander of the Lashkar-e-Taiba, Zia Mustafa, suspected to be involved in the Nadimarg massacre, being produced before presspersons on Thursday. — Photo: Nissar Ahmed

SRINAGAR APRIL 10. The Jammu and Kashmir police today

Figure: 22
Source: https://www.thehindu.com/2003/04/11/stories/2003041103241200.htm

जाने की हिम्मत नहीं हुई।[57]

यह संदेश मुखर हो रहा था कि ''या तो इस्लाम में परिवर्तित हो जाओ, कश्मीर छोड़ दो, या मर जाओ''। 4 जनवरी 1990 को एक स्थानीय उर्दू अखबार, 'आफताब' ने हिज्ब-उल-मुजाहिदीन द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति प्रकाशित की जिसमें सभी पंडितों को तुरंत घाटी छोड़ने के लिए कहा गया। 'अल सफा' नामक एक अन्य स्थानीय दैनिक अखबार ने इसी चेतावनी को दृढ़ता से दोहराया। नकाबपोश सशस्त्र जिहादियों द्वारा भी जुलूस के माध्यम से चेतावनी दी गई। इसके बाद हिंदुओं की हत्या घाटी में एक आम बात हो गयी।

19 जनवरी 1990 को कश्मीरी पंडितों पर आतंक का असर साफ दिखा रहा था। जिहादी उपदेश ''जालिमो, काफिरों कश्मीर हमारा छोड दो'' जैसे प्रचारित व प्रसारित हो रहे थे। कश्मीरी पंडित अपनी ही भूमि में पराये हो गए थे। लूट और बलात्कार की डरावनी कहानियां दिन-प्रतिदिन यथार्थ का रूप लेती जा रही थीं। प्रो. के. एल. गंजू और उनकी पत्नी प्राण गंजू का सोपोर से अपहरण कर लिया गया था। उनकी हत्या होने के बाद प्रो. गंजू के शव को मस्जिद में रखा गया था। उनकी पत्नी के साथ कई दिनों तक

नाम : नवीन सप्रू (उम्र : 30 वर्ष)

निवासी : हब्बा कदल, श्रीनगर

पेशा : केंद्रीय सेवा

हत्या की तारीख : 27.2.1990

नवीन सप्रू अपने कार्यालय से लौट रहे थे तभी आतंकवादियों ने उन्हें दिन के उजाले में गोलियों से छलनी कर दिया। वे नीचे गिर गए लेकिन अभी भी सांस चल रही थीं। एक हिंदू महिला, जो वहां उपस्थित थीं, ने युवक की जान बचाने के लिए लोगों से गुहार लगाई। पर उन्हें पीछे धकेल दिया गया। सप्रू के शव के चारों ओर उन्मादियों ने उल्लास में नाचते हुए उनपर बार-बार गोलियां चलाईं। यह सब आतंकवादियों ने अपने उन्माद को प्रफुल्लित करने के लिए लंबे समय तक किया। आतंकवादियों को अभी तक खुशी नहीं मिली थी। नवीन को उसके परिजन पुलिस वैन मे लेकर जा रहे थे तभी उन्मादियों ने श्मशान घाट तक एक ट्रक से उनका पीछा किया तथा पूरे रास्ते नाच-गाना करते रहे। गायन और नृत्य तब तक जारी रहा जब तक नवीन का शरीर राख में बदल नही गया।

Source : http://ikashmir.net/atrocities/11.html

सामूहिक बलात्कार किया गया और फिर उनके शरीर को पत्थर से बांधकर नदी में फेंक दिया गया।[58] सुश्री सरला भट्ट श्रीनगर कश्मीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, श्रीनगर में एक नर्स के रूप में काम कर रही थीं। उन पर मुखबिर होने का आरोप था। उनका अपहरण किया गया, सामूहिक बलात्कार किया गया और उन्हें मार दिया गया। उसके बाद उनके शव को सूनसान सड़क पर फेंक दिया गया।

Shri Mahesh Kumar
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

पाकिस्तान में आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों में प्रशिक्षण के बाद सीमा पार करते समय बड़ी संख्या में कश्मीरी युवकों को पकड़ा गया एवं उन्हें जेल भेजा गया। राज्य के तात्कालीन मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला ने बड़ी संख्या में इन कश्मीरी युवकों को रिहा किया। इन युवकों ने कश्मीरी पंडितों पर नये सिरे से हमलों की शुरुआत की। उनमें से शीर्ष चार में हामिद शेख, अशफाक वानी, जावेद मीर और यासीन मलिक थे।[59] वे कश्मीरी पंडितों के खिलाफ घृणा अभियान चला रहे थे। लगभग 1500 से अधिक पंडितों की नृशंस हत्यायें हुईं किंतु जम्मू कश्मीर सरकार का अधिकारिक रिकॉर्ड 1989 और 2004 के बीच केवल 219 हत्याओं का आंकड़ा ही पेश कर पाता है।[60]

चित्र 23 : अन्य राज्यों में रह रहे विस्थापित कश्मीरी हिन्दुओं का आंकड़ा

(Data taken from Rediff.com, July 13, 1999. The report lists number of Kashmiri Pandit families who were forced out of Kashmir valley in the 1989-1991 period. The number of individuals reported in this chart is arrived at by assuming an average family size of 5.)

Source: http://ikashmir.net/slides/refugees/s4.html

Event	Date	Death Toll
1998 Wandhama massacre	25/01/1998	23 Hindus
1998 Prankote massacre	17/04/1998	26 Hindus
1998 Chapnari massacre	19/06/1998	25 Hindus
2000 Amarnath massacre	1/8/2000	30 Hindus
2001 Kishtwar massacre	3/8/2001	19 Hindus

चित्र 24 : छिटपुट हत्याओं के अलावा कश्मीरी हिन्दुओं के नरसंहार का आंकड़ा

Source: https://www.efsas.org/publications/study-papers/the-exodus-of- kashmiri-pandits/

पाकिस्तान में हिंदू अल्पसंख्यकों पर जिन्ना इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट

2014-15 में पाकिस्तान स्थित जिन्ना इंस्टीट्यूट ने धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ किए गए अत्याचारों को उजागर करते हुए एक व्यापक सर्वेक्षण के आधार पर पीड़ितों की मार्मिक व्यथा सहित एक विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित की। इस रिपोर्ट में हिंदुओं को धार्मिक कट्टरपंथियों के लिए एक आसान लक्ष्य के रूप में वर्णित किया गया है। इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ पाकिस्तान में सुरक्षा और राहत की भावना की कमी इन अल्पसंख्यक हिन्दुओं के लिए हैरानी की बात थी। जबरन विवाह, लड़कियों का अपहरण और बलात्कार पाकिस्तान में हिंदू समुदाय के सदस्यों की सर्वोपरि चिंता एवं व्यथा थी। इस समुदाय के भीतर असुरक्षा की बढ़ती भावना तथा इन खतरों को संबोधित करने में राज्य की बार-बार असफलता के साथ इनके बढ़ते पलायन के रूप में समाने आई है। हिंदू समुदाय के सदस्यों को ग्रामीण और शहरी सिंध में जबरन वसूली करने वालों और अपहरणकर्ताओं द्वारा निशाना बनाया गया है। सभी अल्पसंख्यक समूहों में से, पाकिस्तानी हिंदुओं ने पक्षपाती स्कूली पाठ्यपुस्तकों के विरोध का खामियाजा उठाया है जो उन्हें 'दुष्ट', विरोधी, और अविश्वासी के रूप में चित्रित करते हैं। 2014 में लरकाना में एक हिंदू सामुदायिक केंद्र में तोड़फोड़ की गई थी और धार्मिक रूप से प्रेरित भीड़ द्वारा कीमती सामान लूट लिया गया था। 2015 में हिंदू समुदाय का जबरन धर्मांतरण, बलात्कार और हमलों की कई घटनाएं हुईं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि हिंदू बहुसंख्यक क्षेत्रों में सरकारी संकेतों से यह ज्ञात होता है कि राज्य की लापरवाही धार्मिक उत्पीड़न को बढ़ावा दे रही है।

कराची में ध्वस्त हिन्दू मन्दिर के पास बैठा श्रद्धालु
Figure 25: Image courtesy: Indiaonline.in

जैश-ए-मोहम्मद एक आतंकी संगठन

जैश-ए-मोहम्मद जिसका अर्थ 'मोहम्मद की सेना' है, वर्ष 2000 में गठित पाकिस्तान आधारित एक सशस्त्र आतंकवादी संगठन है। जैश-ए-मोहम्मद ने सुरक्षाकर्मियों और सरकारी प्रतिष्ठानों पर हमलों के माध्यम से कश्मीर में भारत की अखंडता को लक्षित

चित्र 26 : जैश-ए-मोहम्मद का प्रमुख मसूद अजहर

Source: https://www.telegraph.co.uk/news/worldnews/asia/pakistan/12097851/Pakistan-arrests-militant-group-head-suspected-of-attack-on-Indian-air-base.html

Shri Maneswar Basumatary
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

करने और भारतीय प्रशासन को अस्थिर करने के लिए अपनी नापाक गतिविधियां जारी रखी हैं। इस समूह की स्थापना मसूद अजहर ने की थी, जो पहले हजरत-उल-मुजाहिदीन के बैनर तले लड़ता था और अल-कायदा से संबंधित था।

1999 में इंडियन एयरलाइंस के विमान का अपहरण कर कंधार ले जाया गया। इस उड़ान के दौरान बंधक बनाए गए 150 से अधिक यात्रियों के बदले में मसूद अजहर को भारत द्वारा रिहा किया गया था। इसी अजहर नें जैश-ए-मोहम्मद की स्थापना की थी। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार अजहर ने अल-कायदा प्रमुख ओसामा बिन लादेन और अफगान तालिबान के समर्थन से जैश-ए-मोहम्मद का गठन किया था।

अमेरिकी विदेश विभाग ने दिसंबर 2001 में जैश-ए-मोहम्मद को एक विदेशी आतंकवादी संगठन बताया था।[61] इस समूह के बारे में कहा जाता है कि इसने 2001 के बाद से अमेरिकी नेतृत्व वाली नाटो सेना के खिलाफ अफगान तालिबान की लड़ाई का सक्रिय रूप से समर्थन किया था। आस्ट्रेलिया राष्ट्रीय सुरक्षा पर आस्ट्रेलिया सरकार का पोर्टल जिसपर जैश-ए-मोहम्मद का वर्णन एक

मसूद अजहर के लिए चीन ढाल क्यों बनता है?

मसूद अजहर कश्मीर में अपनी आतंकी गतिविधियों के स्पष्ट सबूतों के बावजूद अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों से बचता रहा है। चीन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के प्रस्ताव संख्या 1267 के तहत अजहर को वैश्विक आतंकवादी घोषित करने के प्रस्ताव को रोकने में अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करता रहा है और मसूद अजहर के लिए ढ़ाल बनता रहा है। सुरक्षा परिषद् आतंकवादियों और आतंकी संगठनों के खिलाफ प्रतिबंधों को निर्धारित करता है। चीन ने मसूद को वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित करने के प्रस्ताव को चार बार अवरुद्ध किया है। चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) में अपने व्यापारिक हित के कारण दक्षिण एशिया में पाकिस्तान को अपना ''ऑल वेदर'' सहयोगी मानता है। चीन के शिनजियांग प्रांत में उइगर मुस्लिमों के मुद्दे पर हस्तक्षेप न करने के लिए अफगान तालिबान के साथ चीन ने एक मौन समझौता कर रखा है जिसके तहत चीन अफगान-तालिबान को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नुकसान नहीं पहुंचाएगा और अफगान-तालिबान ने भी इस विषय पर मौन रहने की सहमति दी है। एक आर्थिक प्रतियोगी के रूप में भारत की मौजूदगी से चीन को भी खतरा है। इसलिए भारत में घरेलू अशांति चीन के लिए एक उपयुक्त विकल्प है।

Source : https://indianexpress.com/article/explained/why-is-china-shielding-jaish-pulwama-attack-5591844/)

MILITANTS KILLED IN JAMMU & KASHMIR

2017	182
2016	165
2015	113

A US Army M4 carbine was recovered after the operation which killed Rashid Tuesday. *PTI*

AMONG IDENTIFIED FOREIGN MILITANTS KILLED IN JAMMU & KASHMIR, LASHKAR LEADS JAISH AND HIZB BY A LONG WAY

	LeT	JeM	HM	UNIDENTIFIED	TOTAL
2017*	21	12	0	69	102
2016	13	0	0	91	104
2015	6	6	1	45	58
Total	40	18	1	205	264

IN SOUTH KASHMIR, MOST MILITANTS KILLED IN LAST 5 YEARS FROM HIZB, MORE JAISH KILLED THAN EVER BEFORE THIS YEAR

	HM	LeT	JeM**	TOTAL
2017*	35	25	11	71
2016**	20	10	5	35
2015	14	12	8	34
2014	16	5	2	23
2013	6	4	0	10
2012	2	8	0	10
2011	6	9	3	18
Total	99	73	29	201

***2016 figures for "Jaish" includes other militant groups as well. Most of the fighting today is in South Kashmir*

HM: Hizb-ul-Mujahideen, LeT: Lashkar-e-Taiba, JeM: Jaish-e-Muhammad

**2017 figures until October 31*

Source: Jammu & Kashmir Police

Figure 27: Source: https://indianexpress.com/article/explained/kashmir-masood-azhar-talha-rashid-killed-jaish-e-muhammad-lashkar-hizb-ul-mujahideen-indian-army-militancy-terrorism-4930417/

"कट्टरपंथी देवबंदी सुन्नी इस्लामी संगठन" के रूप में किया गया जो कश्मीर में मुख्य रूप से काम कर रहा है। यह संगठन छह लाख की आबादी वाला शहर बहावलपुर से संचालित होता है। यहीं पर पाकिस्तानी सेना का कॉर्प्स XXXI का मुख्यालय भी है।[62] अजहर ने जिहाद पर चार-खंड की एक पुस्तक लिखी है। इसके अलावा उसकी पुस्तकों में से एक "फॉरटी डिजिजेज ऑफ द ज्यूज" है जिसके अनुसार इस्लाम के दुश्मनों का एक वैश्विक गठबंधन है जिसमें इजराइल, भारत और अमेरिका शामिल हैं।[63]

Shri Maninder Singh Attri
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

जैश-ए-मोहम्मद ने अपने गठन के बाद से ही अनेकों बार भारतीय प्रतिष्ठानों के खिलाफ फिदायीन हमले किए हैं। यह अक्टूबर 2001 में कश्मीर में विधानसभा भवन पर हमले के लिए भी जिम्मेदार था, जिसमें 38 लोग मारे गए थे।[64] नई दिल्ली स्थित भारतीय संसद भवन पर हमले में जैश-ए-मोहम्मद को अल कायदा ने महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की और इसके शीर्ष नेताओं ने वैश्विक आतंकी आंदोलन का एकीकरण किया है।[65]

जैश-ए-मोहम्मद के आतंकवादियों को भौतिक संसाधन अन्य उग्रवादी संगठनों जैसे हजरत उल-जिहाद-ए-इस्लामी और हजरत उल-मुजाहिदीन के द्वारा मुहैया कराये जाते रहे हैं। 2002 में पाकिस्तानी अधिकारियों ने जैश-ए-मोहम्मद के एक आतंकवादी को अमेरिकी पत्रकार डैनियल पर्ल के अपहरण और हत्या के जुर्म में गिरफ्तार किया और दोषी ठहराया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा अजहर एवं उसके संगठन जैश-ए-मोहम्मद को विदेशी आतंकी संगठनों की काली सूची में शामिल किया गया। इस सूची से अपने संगठन को बचाने के लिए मसूद अजहर ने अपने संगठन का नाम बदलकर तहरीक-उल-फुरकान रख दिया। अपने संगठन के वित्तीय संसाधनों को बचाने के लिए संगठन के अपेक्षाकृत अज्ञात आतंकवादियों में वितरित कर दिया गया।[66]

2016 में पठानकोट में भारतीय वायु सेना के अड्डे पर जैश-ए-मोहम्मद द्वारा हमला किया गया था जहां एक नागरिक और सात भारतीय सुरक्षा बल के जवान मारे गए थे। लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद कुपवाड़ा जिले में बार-बार भारतीय सुरक्षा बलों को चुनौती दे रहे थे।[67] 2017 में मसूद अजहर के भतीजे तल्हा रशीद को पुलवामा जिले के कंडी कालर गांव में एक मुठभेड़ में भारतीय सुरक्षाबलों ने मार गिराया था। कश्मीर के पुलिस महानिरीक्षक मुनीर खान ने कहा कि पहली बार जैश-ए-मोहम्मद ने पाकिस्तानी आतंकवादी होने को स्वीकार किया।[68] पाकिस्तानी प्रशासन ने पाकिस्तान में आतंकवाद की गहरी जड़ों को स्वीकार किया है। सन् 2010 में पाकिस्तान में दो मस्जिदों पर भयानक आतंकवादी हमले, जिसमें 80 लोगों की मौत हो गई, जिसके बाद पाकिस्तान के तात्कालीन आंतरिक मंत्री रहमान मलिक ने आतंकवाद के पोषण की लंबे समय से चली आ रही राज्य नीति के कारण आतंकवादी समूहों को जड़ से खत्म करने में नागरिक सरकार की असमर्थता व्यक्त की।[69]

Shri Manoj Kumar Behra
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

चित्र 28 : जैश का आतंकी केन्द्र एक मस्जिद के अन्दर स्थित है जिसे 'जामिया मस्जिद सुबा अल्लाह' कहा जाता है, जो बहावलपुर, सरहद राष्ट्रीय राजमार्ग के पास स्थित है

Source: https://www.indiatoday.in/india/story/pulwama-terror-attack-jaish-e-mohammed-headquarters-in-pakistan-bahawalpur-india-today-exclusive-1457818-2019-02-16

आतंकवाद के विषैले दंश: एक यथार्थ

आतंकवाद सबसे बड़ा अभिशाप है, जो लोकतंत्र और मानवता की नींव को तबाह-व-बर्बाद कर रहा है। कट्टरपंथी इस्लामी विस्तारवाद से प्रेरित आतंकवाद, दुनिया भर में लाखों लोगों की मौत का कारण बना है। यह अध्ययन वैश्विक स्तर से लेकर राष्ट्रीय एवं राज्यों में होने वाले आतंकवाद के प्रभाव के आंकड़ों के तथ्य प्रस्तुत करता है।

चित्र 29 : 2017 में आतंकवाद से प्रभावित होने वाले देशों की सूची[70]

Shri Mohan Lal
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

चित्र 30 : 2017 में आतंकी हमलों के कारण विभिन्न देशों के मृतकों की सूची[71]

चित्र 31 : 2005-2018 के बीच भारत भर में आतंकी हमलों में वृद्धि[72]

चित्र 32 : 2005 से भारत में इस्लामिक उग्रवाद में हुई वृद्धि[73]

चित्र 33 : जम्मू कश्मीर में सक्रिय आतंकवादी समूह[74]

चित्र 34 : जम्मू कश्मीर में 2005-18 के बीच आतंकी हमलों की संख्या[75]

चित्र 35 : 2005-18 के बीच जम्मू कश्मीर में मारे गये आतंकवादियों की संख्या[76]

Shri Ram Vakeel
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Rathod Nitin Shivaji
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Rattan Kumar Thakur
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Rohitash Lamba
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Naseer Ahmed
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Narayan Lal Gurjar
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Pankaj Kumar Tripathi
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

चित्र 36 : 2005-18 के बीच आतंकवादी हमलों की वजह से हुए शहीद सुरक्षाकर्मी[77]

चित्र 37 : जम्मू कश्मीर में 2005-18 के बीच आतंकवादी हमलों के कारण मारे गये नागरिकों की संख्या[78]

Terror Apologists:

"Why wasn't plebiscite held in Kashmir, making people talk about it? What are they afraid of? Nothing can be done now. Didn't they somehow divide the nation, that's all. Why don't you ask them again? They won't do it,"

—Kamal Haasan

Kamal Haasan politicize Pulwama terror attack. Refers PoK as "Azad Kashmir".

मुम्बई में 1993 से अब तक हुए आतंकी हमले

क्र.सं.	वर्ष	स्थान	घटनाएँ	मौत	घायल
1	1993	13 blasts across the city	1	257	713
2	1997	Near Jama Masjid	1	0	3
3	1998	Malad, Virar	2	9	1
4	2002	Ghatkopar, Mumbai Central railway station	2	3	56
5	2003	Vile Parle, Mulund Railway Station, Bandra, Ghatkopar, Gateway of India and Zaveri Bazaar	5	68	299
6	2006	7 blasts at 7 locations in local trains across the city	1	181	890
7	2008	Multiple terrorist attacks across the city	1	175	300
8	2011	Serial blasts in Mumbai	1	26	131
		Total	**14**	**719**	**2393**

Terror Apologists:

Mallika Dua asked people to stop showing what she called their 'nakli (fake) nationalism' by showing their grief and anger about the attack for a 'few likes'.

दिल्ली में 1997 से अब तक हुए आतंकी हमले

क्र.सं.	वर्ष	घटनाएँ	मारे गये लोगों की संख्या	घायलों की संख्या
1	1997	10	73	392
2	1998	4	3	60
3	1999	2	2	27
4	2000	4	2	35
5	2001	4	11	33
6	2005	1	1	60
7	2006	1	0	14
8	2008	2	28	171
9	2010	1	0	0
10	2011	2	14	88
11	2012	1	0	4
Total		**32**	**134**	**884**

आतंकवाद का धर्म नहीं तो शहीदों की जाति क्यों?

Terror Apologists:

"Entire nation can't be held responsible" -Navjot Singh Sidhu on Pakistan after Pulwama Attack.

मिथ्या खबरों का मकड़जाल

Fahad Shah
@pzfahad

SOS: Kashmri girls trapped in hostel at Dolphin college in Dehradun, asking for help, as mob is shouting outside. A girl called saying, please save us, take us out of here. #Kashmir

6:37 PM - Feb 16, 2019

746 802 people are talking about this

Priya Dutt @PriyaDutt_INC

News of kashmiri students being attacked by mobs in Dehradun is saddened me , Kashmir is our state and the Kashmiri people our brethren, this is not the time to be divided and fight our own, that is what they want, we must stand as one and protect eachother. India is ONE

Show this thread

Shehla Rashid شہلا رشید @Shehla_Rashid · Feb 16, 2019

#SOSKashmir 15-20 Kashmiri girls trapped in a hostel in Dehradun for hours now, as an angry mob outside demands that they be expelled from the hostels. This is in Dolphin institute. Police is present but unable to disperse the mob.@INCUttarakhand @uttarakhandcops @ukcopsonline

Uttarakhand Police
@uttarakhandcops

This is not true ...Police sorted out d issue ..There r no crowds .. Initially there was an allegation that kashmiri students raised pro pakistan slogans.

10:59 PM - Feb 16, 2019

2,482 1,210 people are talking about this

Uttarakhand Police
@uttarakhandcops
Follow

सुद्धोवाला, Dehradun में स्थित Nest Hostel के संबंध में सोशल मीडिया पर अफवाहें फैलाई जा रही थी कि हॉस्टल में छात्राओं को बंद किया गया है, जो पूर्णत: तथ्यहीन एवं भ्रामक है। वर्तमान में हॉस्टल में 75 छात्राएं रह रही हैं। छात्राओं द्वारा भी ऐसी अफवाहों का खंडन किया गया है।

Translate Tweet

3:09 PM - 17 Feb 2019

पुलवामा आतंकी हमला
बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा (न भूलेंगे, न माफ करेंगे)

एक नृशंस और कायरतापूर्ण हमलें में 14 फरवरी 2019 को कश्मीर में यात्रा कर रहे सीआरपीएफ के जवानों के काफिले पर अवंतीपुरा में एक आत्मघाती कार सवार हमलावर ने सैनिकों को निशाना बनाया। इसमें हमारे 40 जवान वीरगति को प्राप्त हुए। कई सैनिक गंभीर रूप से घायल हो गए। पाकिस्तान प्रायोजित आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने इस आतंकी हमले की जिम्मेदारी ली। इस कार को हमले के दस दिन पहले 24 वर्षीय सज्जाद भट्ट ने खरीदा था। वह तब से फरार है। पाकिस्तान ने पुलवामा में आतंकी गतिविधियों को प्रायोजित करने और शरण देने में अपने हाथ होने से साफ इनकार कर दिया है। इसके पहले

चित्र 38 : पुलवामा आतंकी हमलों में शहीद हुए जवानों का बड़गाम सी.आर.पी.एफ. कैम्प में तिरंगे में लिपटा हुआ पार्थिव शरीर
Source: https://www.hindustantimes.com/india-news/india-unites-in-mourning-for-crpf-jawans-killed-in-pulwama-terror-attack/story-SvovdiXhs5Dq9fKZFn4NmO.html

2001 में इस तरह का फिदायीन हमला हुआ था। जब जैश-ए-मोहम्मद ने श्रीनगर सचिवालय के बाहर आत्मघाती हमला किया था। इस हमले में 38 लोग मारे गए थे और 40 अन्य घायल हो गए थे।[79]

Shri Pradeep Kumar
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

देश भर में इन सैनिकों की नृशंस हत्याओं पर आक्रोश भड़क उठा। सभी उम्र के लोगों ने प्रार्थना सभा और कैंडल मार्च आयोजित करके मृत सैनिकों के प्रति सम्मान और संवेदना व्यक्त की। पुलवामा हत्याकांड के अपराधियों को सबक सिखाने के लिए पूरे भारतवर्ष से मांग उठी। विदेशों में बसे भारतीयों ने भी अपना गुस्सा दर्ज कराने के लिए पाकिस्तानी दूतावासों के सामने विरोध मार्च निकाला।

हालांकि हमारे सशस्त्र बल पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के नापाक मंसूबों को नेस्तानाबूद करने के लिए कृतसंकल्प हैं, लेकिन भारत में कुछ राजनीतिक वर्ग, नागरिक समाज और माफी देने वालों का एक समूह है जो आतंक और इस्लामी कट्टरता पर निर्णायक कार्रवाई करने

चित्र 39 : पुलमावा आतंकी हमले के बाद ध्वस्त हो चुकी बस तथा क्षत-विक्षत सैनिकों के अवशेष

में बाधाएं उत्पन्न करता है।

कश्मीर घाटी अलग पहचान कायम रखने के लिए एवं अल्पसंख्यकों की स्थिति के बहाने, घाटी में कट्टरपंथियों द्वारा बनाई जा रही फॉल्ट लाइनों पर काबू पाने में कश्मीरियों को दी गई संवैधानिक प्राथमिकताएं एक अड़चन साबित हुई हैं। अब समय आ गया है कि हम उन सख्त नीतियों को लागू करें जो कुकुरमुत्ते की तरह बढ़ रहे अलगावादी मानसिकता को जड़ से नष्ट करने में सहायक हो, तथा राज्य को अपने विशेषाधिकार से मुक्त करके सम्पूर्ण राष्ट्र को एक साथ मिलाने के मार्ग को प्रशस्त करें।

Ministry of Foreign Affairs
Government of Pakistan

(Office of the Spokesperson)

****

No.45/2019

Press Release

Attack in Pulwama

Attack in Pulwama in the Indian Occupied Kashmir is a matter of grave concern.

We have always condemned acts of violence anywhere in the world.

We strongly reject any insinuation by elements in the Indian media and government that seek to link the attack to Pakistan without investigations.

Islamabad
14 February 2019

चित्र 40 : पुलवामा आतंकी हमले में अपना हाथ होने से इनकार करती पाकिस्तान सरकार की प्रेस-विज्ञप्ति

Source : https://www.indiatoday.in/india/story/pulwama-awantipora-jammu-and-kashmir-terror-attack-live-1456117-2019-02-14

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् द्वारा पुलवामा आतंकी हमले की निंदा

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् (यू.एन.एस.सी.) में चीन सहित 15 स्थायी और गैर-स्थायी सदस्य देशों नें बहुत ही कड़े शब्दों में पुलवामा के आंतकी हमले की निंदा की। पाकिस्तान स्थित आतंकी समूह जैश-ए-मोहम्मद द्वारा पुलवामा आतंकी हमले को ''जघन्य और कायरतापूर्ण'' बताया गया। फ्रांस द्वारा दिये गए प्रस्ताव को अमेरिका, ब्रिटेन और रूस का समर्थन प्राप्त हुआ।

यू.एन.एस.सी. के बयान में कहा गया है, ''सुरक्षा परिषद के सदस्यों ने जम्मू-कश्मीर में जघन्य और कायरतापूर्ण आत्मघाती बम विस्फोटों की कड़ी शब्दों में निंदा की है। 14 फरवरी, 2019 को 40 से अधिक भारतीय अर्द्धसैनिक बल के जवान मारे गए और दर्जनों घायल हो गए। इस हमले की जिम्मेदारी आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने ली।'' जैश-ए-मोहम्मद को 2002 के बाद से ही संयुक्त राष्ट्र द्वारा एक आतंकवादी संगठन घोषित किया गया है। संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस ने प्रस्ताव दिया है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को पाकिस्तान स्थित आतंकवादी समूह जैश-ए-मोहम्मद के प्रमुख मसूद अजहर को काली सूची में शामिल करना चाहिए।

Source:https://www.financialexpress.com/india-news/pulwama-aftermath-china-signs-off-on-unsc-statement-naming-jaish-e-mohammed-for-cowardly-act/1495187/

Shri Sanjay Kumar Sinha
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Sanjay Rajput
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Shyam Babu
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Subramanian G
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Sudip Biswas
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Sukhjinder Singh
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Pradeep Singh
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

चित्र 41 : भारतीय अमेरिकी समुदाय के लोगों द्वारा पुलवामा नरसंहार के विरूद्ध शिकागो में पाकिस्तानी दूतावास के बाहर मोमबत्ती जलाकर प्रदर्शन
Source: .http://www.asianage.com/world/americas/200219/pulwama-attack-indian-americans-to-protest-outside-chinese-pak-consulate-in-us.html

चित्र 42 : शहीद सैनिक महेश यादव के परिजन जिनके आँसू थम नहीं रहे

Source: https://www.rediff.com/news/report/pix-pulwama-terror-attack-india-salutes-its-bravehearts/20190216.htm

Shri Prasanna Kr Sahoo
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

चित्र 43 : देहरादून में सी.आर.पी.एफ. जवान मोहन लाल को श्रद्धांजलि देते शोकाकुल पत्नी एवं पुत्री

Source: https://www.business-standard.com/article/pti-stories/indian-americans-across-us-mourn-pulwama-terror-attack-victims-119021900177_1.html

Shri Tilak Raj
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Vasantha Kumar V V
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Vijay Soreng
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Virendra Singh
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Vijay Kumar Maurya
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

Shri Ramesh Yadav
Martyred on 14/02/2019
Pulwama Terror Attack

चित्र 44 : पुलवामा आतंकी हमले में शहीद हुए सी.आर.पी.एफ. के जवानों को मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि देते हुए दिल्ली के इंडिया गेट पर एकत्रित लोग

Source: http://cms.newindianexpress.com/thesundaystandard/2019/feb/17/pulwama-terror-attack-delhi-united-in-solidarity-with-jawans-1939799.htm

Global Society unites to condemn Pulwama Attack

The Washington Post
Democracy Dies in Darkness

At least 38 killed in deadliest attack on security forces in Indian-controlled Kashmir in 3 decades

SCREENGRAB: WASHINGTON POST

The New York Times

SUBSCRIBE NOW | LOG IN

Kashmir Suffers From the Worst Attack There in 30 Years

SCREENGRAB: THE NEW YORK TIMES

The Hungarian Government strongly condemns the dreadful terrorist attack in Pulwama, India

February 15, 2019 2:54 PM

Recommend 4

The Hungarian Government strongly condemns the dreadful terrorist attack that was committed in Pulwama, India on 14 February 2019, which claimed several lives and seriously injured many people.

Terrorism is a global challenge, and the international community must react in a firm, unified and coordinated manner. Hungary condemns these inhumane acts and is fully committed to continuing to work together with India to fight all forms of terrorism.

We would like to express our condolences to the families of the victims and to wish the inured a speedy recovery.

(Ministry of Foreign Affairs and Trade)

GULF NEWS
GOVERNMENT

Year of Zayed

UAE condemns terrorist attack on police force in Kashmir

Ministry called on the international community to unify efforts in confronting extremism

Abdulla Shahid
@abdulla_shahid

Strongly condemn the suicide terrorist attack on the convoy carrying Indian security forces in Jammu and Kashmir today. I extend my prayers and condolences to the bereaved families of the dead and injured.@MEAIndia

9:05 PM - Feb 14, 2019

934 350 people are talking about this

Ranil Wickremesinghe
@RW_UNP

I strongly condemn the brutal terrorist attack in Kashmir's Pulwama district — the worst ever terror attack in Jammu and Kashmir since 1989. I express my condolences to @narendramodi and the families of police officers who lost their lives.

8:49 PM - Feb 14, 2019

2,358 889 people are talking about this

Ken Juster
@USAmbIndia

The U.S. Mission in India strongly condemns today's terrorist attack in Jammu & Kashmir. We send our heartfelt condolences to the families of the victims. The United States stands alongside India in confronting terror and defeating it. #KashmirTerrorAttack

7:42 PM - Feb 14, 2019

10.6K 4,256 people are talking about this

Research Institutes Engaged in Study of Genesis and Propagation of Terror

SATP : SOUTH ASIAN TERROR PORTAL

The South Asia Terrorism Portal is a project conceived, executed and maintained by the Institute for Conflict Management, an autonomous, non-governmental, non-profit society set up in 1997, based in New Delhi, India.The Institute is committed to the task of evaluating terrorist and violent movements which threaten the fabric of modern states in South Asia and recommend solutions. The Institute was set up by its current President, KPS Gill, IPS (Retd...), who led a successful battle against terrorism in Punjab. The Institute also offers research services in the area of terrorism and conflict management.

IDSA: INSTITUTE FOR DEFENSE STUDIES AND ANALYSES

The Institute for Defence Studies and Analyses (IDSA) is a non-partisan, autonomous body dedicated to objective research and policy relevant studies on all aspects of defence and security. Its mission is to promote national and international security through the generation and dissemination of knowledge on defence and security-related issues.

ISSSP: INTERNATIONAL STRATEGIC AND SECURITY STUDIES PROGRAMME

The International Strategic and Security Studies Programme (ISSSP) started at the National Institute of Advanced Studies (NIAS) in 1996 with the broad objective of conducting research on national and international security issues. The emphasis of research is towards integrating complex elements of Science and Technology with Political Science, International Relations, Economics and Policy Analysis. Rapidly changing geo-political and technology development and adaptation affect the national and international security and strategic conditions and the research carried out in the Programme reflects this. Current and emerging scenarios in the nuclear, missiles and space domain are reflective of such an impact and have formed the core area of research. The ISSSP is part of the School of Conflict and Security Studies at NIAS which was conceived and founded by the late Mr. J. R. D. Tata in 1988, with a vision to conduct advanced multidisciplinary research. The Institute is unique in its integrated approach to the study of intersections between science and technology, philosophy, social and policy issues. The objective is to nurture a broad base of scholars, managers and leaders who would respond to the complex challenges that contemporary India and global society face, with insight, sensitivity, confidence and dedication.

सर्जिकल स्ट्राइक 2.0 - पुलवामा आतंकी हमले का बदला

सर्जिकल स्ट्राइक में विध्वंस किए गए जैश-ए-मोहम्मद के संदिग्ध प्रशिक्षण शिविर।
Image source : ANI

पुलवामा आतंकवादी हमले के 12 दिन बाद 26 फरवरी 2019 को ख़ैबर पख़्तूनख़्वा प्रांत, पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू कश्मीर और पाकिस्तान के अंदर आतंकी ट्रेनिंग कैंप और लॉन्चिंग पैड को खत्म करने के लिए भारतीय वायु सेना ने हवाई हमले किए। इन हमलों में जैश-ए-मोहम्मद के शिविर को तबाह-व-बर्बाद कर दिया गया। यहां पर कम-से-कम संभावित 325 आतंकवादी और 25-27 प्रशिक्षक रह रहे थे। पाकिस्तानी अधिकारियों ने इस हमले की पुष्टि तो की लेकिन इन हमलों में हुए नुकसान का खुलासा करने से वे बचते रहे। राष्ट्रीय तकनीकी अनुसंधान संगठन ने कहा है कि बालाकोट में आतंकी संगठन के प्रशिक्षण शिविर में 300 सक्रिय मोबाइल कनेक्शन भी थे। पाकिस्तान ने जवाबी कार्रवाई में भारत के प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने के लिए अपनी वायु सेना का इस्तेमाल किया लेकिन उसके प्रयासों को सफलतापूर्वक भारत द्वारा नाकाम कर दिया गया। पाकिस्तानी वायुसेना के विमान जम्मू कश्मीर के नौशेरा सेक्टर में दाखिल हुए थे जिनमें से एक विमान एफ 16 को भारतीय वायुसेना के विंग कमांडर अभिनंदन वर्तमान ने मार गिराया था। इसी प्रक्रिया के दौरान विंग कमांडर का विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और वे पाकिस्तानी सीमा में दाखिल हो गए। वहीं पाकिस्तानी सेना ने उन्हें हिरासत में ले लिया। बाद में भारत के कूटनीतिक दबाव के कारण अभिनंदन वर्तमान को पाकिस्तानी सरकार ने रिहा कर दिया।

पाकिस्तान में हिरासत के दौरान विंग कमांडर अभिनंदन (बाएं) और रिहा होने के बाद की तस्वीर (दाएँ)[80]

पुलवामा में शहीद हुए जवानों की तेरहवीं और श्राद्ध अब सही तरीके से पूर्ण हुई है। पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए यह सर्जिकल स्ट्राइक जरूरी था।

–श्री मोहन भागवत

सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

संदर्भ

1 Nilamata Purana (Critical Edition), Editor: Ram Lal Kanji Lal, M.A., Vedanta-tirtha, Vidyaratna and Pandit Jagad-dharaZadoo, The Punjab Sanskrit Book Depot, Lahore, 1924
2 Kings of Kashmira, A translation of the SanskritaWork ,Rajatarangini of Kalhana - English - Jogesh Chunder Dutt Volumes 1 & 2
3 The Wonder That Was Kashmir by Subhash Kak, http://ikashmir.net/subhashkak/article3.html
4 Culture and Political History of Kashmir, Volume 1, P. N. K. Bamzai, M.D Publications
5 Explore Kashmiri Pandits, Bansi Pandit, Dharma Publications, 2008 ISBN : 0-9634798-6-5
6 Kashmir and It's People: Studies in the Evolution of Kashmiri Society, M. K. Kaw, 2004, ISBN : 81-7648-5373
7 The Wonder That Was Kashmir - Subhash Kak, https://pdfs.semanticscholar.org/49b7/3fb850f9a0a2eeef76c83161b242cacb4454.pdf
8 Kashmir School of Painting - Dr. A. K. Singh, http://www.koausa.org/Crown/painting.html
9 Ibid. 7
10 The History of India, as Told by Its Own Historians. The Muhammadan Period; by Sir H. M. Elliot; Edited John Dowson; London Trubner Company 1867–1877 Vol I
11 https://timesofindia.indiatimes.com/india/Cheraman-Juma-Masjid-A-1000-year-old-lamp-burns-in-this-mosque/articleshow/47486911.cms
12 A Historical Survey: Kashmir Through The Ages (5000 B. C. TO 1967 A D Gwasha Lal Kaul 1967, Eighth Edition, Published by Chronicle Publishing House Srinagar Kashmir Inch.
13 Kashmir : Pat and Present-Unravelling the Mystique, https://ikashmir.net/pastpresent/doc/pastpresent.pdf
14 Ibid.12
15 India: A History. Revised and Updated, John Keay.
16 The Story of The Integration of The Indian States, V.P. Menon, Orient Longman Limited,1956
17 Ibid
18 https://samvada.org/2012/articles/merger-of-jammu-and-kashmir-with-india-is-complete-ashuthosh/
19 Ibid.16
20 An Eyewitness Account of the 1947 raid by Tribals from Pakistan-by T.N.Bhan, http://kashmiris-in-exile.blogspot.com/2007/11/eyewitness-account-of-1947-raid-by.html
21 Major-General Akbar Khan, an army officer who is widely believed to have played a pivotal role in starting the invasion, emerged as "the architect of (the) philosophy of armed insurrection by aiding non-state actors as state proxies", writes a military historian, Major (Retd.) Agha Humayun Amin, in his book , The 1947-48 Kashmir War: The War of Lost Opportunities (https://www.bbc.com/news/world-asia-41662588)
22 P.C Azad, M.A LLB Advocate, whither Pakistan, Swarajya Publication, About this Book, January, 1966
23 M Ilyas Khan, BBC News, Operation Gibraltar: The Pakistani troops who infiltrated Kashmir to start a rebellion, 5 September 2015, https://www.bbc.com/news/world-asia-34136689
24 Syed Shoaib Hasan, BBC News, Why Pakistan is 'boosting Kashmir militants', 3 March 2010, Islamabad. (http://news.bbc.co.uk/2/hi/south_asia/4416771.stm)
25 Sumantra Bose, Aljazeera, The evolution of Kashmiri resistance,2 Aug 2011 (https://www.aljazeera.com/indepth/spotlight/kashmirtheforgottenconflict/2011/07/2011715143415277754.html)
26 Ibid
27 Business Standard, Pakistan supported, trained terror groups: Pervez Musharraf, Press Trust of India, October 28, 2015,Lahore (https://www.business-standard.com/article/international/pakistan-supported-trained-terror-groups-pervez-musharraf-115102800015_1.html)

28 Rediff, Links between ISI, militant groups: Straw, Tuesday, June 11,2002 (https://www.rediff.com/news/2002/jun/11war4.htm)
29 ISI has links with J&K militants: Straw, Times of India, Jun 11, 2002 (https://timesofindia.indiatimes.com/ISI-has-links-with-JK-militants-Straw/articleshow/12687237.cms?)
30 Zaffar Abbas, BBC correspondent in Islamabad, Analysis: Is al-Qaeda in Kashmir?, Thursday, 13 June, 2002 (http://news.bbc.co.uk/2/hi/south_asia/2043800.stm)
31 N Saleem Pandit, times of india, J&K: Pro-IS slogans at funeral of slain terrorist, Nov 20, 2017 (https://timesofindia.indiatimes.com/india/jk-pro-is-slogans-at-funeral-of-slain-terrorist/articleshow/61717098.cms)
32 Syed Shoaib Hasan,Islamabad, BBC News, Why Pakistan is 'boosting Kashmir militants, 3 march 2010, (http://news.bbc.co.uk/2/hi/south_asia/4416771.stm)
33 Excelsior Correspondent, over 150 militants, mostly foreigners, active in Kashmir: DGP Daily Excelsior, 01/11/2014 (http://www.dailyexcelsior.com/150-militants-mostly-foreigners-active-kashmir-dgp/)
34 Ibid
35 https://www.aljazeera.com/indepth/spotlight/kashmirtheforgottenconflict/2011/07/2011715143415277754.html, Sumantra Bose, 2 Aug 2011.
36 Ibid tariq mir, Kashmir: From Sufi to Salafi , November 05, 2012, https://pulitzercenter.org/reporting/kashmir-sufi-salafi
37 Ibid
38 Ibid. 23
39 European Parliament, Director general of External Policies, The Involvement of salafism/Wahhabism in the Support and Supply of arms to Rebel Groups around the world, Belgium, June 2013.
40 http://www.islamic-relief.org/category/where-we-work/india/
41 A Chronicle of Important events and dates in J&K's political History (http://www.jammu-kashmir.com/basicfacts/politics/political_history.html)
42 Braj B. Kachru, Department of Linguistics, University of Illinois, U.S.A, The Excerpts taken from: An Introduction to Spoken Kashmiri, Kashmir: Sufis, Saints and Shrines, June, 1973.
43 Rise of Wahhabism in Kashmir: Literature and Madras's Radicalizing the Youth, July 11, 2017. (https://www.newsgram.com/wahhabism-in-kashmir-literature-and-madrasas-radicalising-youth)
44 Zainab Akhter, Kashmir: Religious-Extremism on the Rise, 15 Oct, 2012 (http://www.ipcs.org/comm_select.php?articleNo=3726)
45 Ibid.
46 Aarti Singh, The Times of India (Delhi),How mosques and mobiles are radicalising Kashmir, Jul 09 2017 (http://epaperbeta.timesofindia.com/Article.aspx?eid=31808&articlexml=How-mosques-and-mobiles-are-radicalising-Kashmir-09072017010016)
47 Ibid
48 Ibid
49 Ibid.43
50 Ibid.43
51 (Arabization or Arabisation is either the conquest and/or colonization of a non-Arab area and growing Arabic and Islamic culture influence on non-Arab populations, causing a language shift by their gradual adoption of the Arabic language and/or their incorporation of the culture, mainly Islamic or Arab identity) see: https://en.wikipedia.org/wiki/Arabization
52 Tariq Mir, Kashmir: From Sufi to Salafi , November 05, 2012, https://pulitzercenter.org/reporting/kashmir-sufi-salafi
53 Ibid
54 Ibid
55 Ibid

56 Kashmir: Its Aborigines and Their Exodus, Colonel Tej K Tikoo , Lancer Publishers , 2013 eISBN: 978-1-93551-58-9
57 Our Moon Has Blood Clots: A Memoir of a Lost Home in Kashmir , Rahul Pandita, Random House India
58 http://ikashmir.net/atrocities/1.html
59 The Exodus of Kashmiri Pandits, https://www.efsas.org/publications/study-papers/the-exodus-of-kashmiri-pandits/
60 https://www.thehindu.com/todays-paper/ldquo219-Kashmiri-Pandits-killed-by-militants-since-1989rdquo/article16006510.ece
61 Responses to Information Requests, Immigration and Refugee Board of Canada https://irb-cisr.gc.ca/en/country-information/rir/Pages/index.aspx?doc=455722
62 https://www.aph.gov.au/Parliamentary_Business/Committees/Joint/Completed_Inquiries/pjcis/four_terrorist/report/Appendix%20D
63 https://www.hindustantimes.com/world/pakistan-didn-t-detain-masood-azhar-after-pathankot-attack-report/story-QlXZi7xMlPtaPNF1ZVg1NJ.html
64 Mapping Militant Organisations- Jaish-e-Mohammad, http://web.stanford.edu/group/mappingmilitants/cgi-bin/groups/view/95#note16
65 https://www.longwarjournal.org/archives/2010/12/us_designates_pakist.php, BILL ROGGIO | December 2, 2010 |
66 Ibid. 4
67 https://www.refworld.org/docid/5bcf1f3dc.html
68 Masood Azhar's nephew, top Jaish terrorist killed in Pulwama encounterhttps://www.rediff.com/news/report/masood-azhars-nephew-top-jaish-terrorist-killed-in-pulwama-encounter/20171107.htm
69 Official Admits Militancy's Deep Roots in Pakistan,https://www.nytimes.com/2010/06/03/world/asia/03pstan.html?_r=0
70 https://ourworldindata.org/terrorism
71 Ibid
72 http://www.satp.org
73 http://www.satp.org/satporgtp/countries/india/database/Cumulative_Fatalities.html
74 http://www.satp.org
75 http://www.satp.org
76 http://www.satp.org
77 http://www.satp.org
78 http://www.satp.org
79 https://www.news18.com/news/india/pulwama-attack-the-second-suicide-car-bomb-attack-in-history-of-kashmir-2036699.html
80 https://www.businesstoday.in/current/economy-politics/air-force-strikes-in-pok-live-fighter-jets-drop-1000-kg-bombs-across-loc-destroy-jaish-terror-camps/story/322343.html
81 (https://www.ndtv.com/india-news/what-happened-at-balakot-unreleased-satellite-pic-may-prove-indias-case-2002060
82 https://www.indiatoday.in/india/story/days-before-iaf-balakot-strike-ntro-confirmed-around-300-active-targets-in-jaish-terror-camp-1470222-2019-03-04
83 https://metrosaga.com/pakistan-to-release-abhinandan/)

ISBN 978-93-84835-29-3
9 789384 835293